मेरी खेती

Pages:- 1- 15 | www.merikheti.com | हिंदी | अगस्त 2021

धान की खेती की रोपाई के बाद करें देखभाल, हो जाएंगे मालामाल

बुवाई के बाद बाजरा की खेती की करें ऐसे देखभाल

आधुनिक तकनीक से मिलेगी आवारा पशुओं से मुक्ति

पशुओं के सूखे चारे के रूप में इस्तेमाल की जा सकती है लेमनग्रास

जैविक खेती को मिलेगा यूपी में सरकार का साथ

किसानों की आय बढ़ाने के लिए छत्तीसगढ़ सरकार की खास योजना

सूनी सड़क पर महिलाओं ने गुलजार किया सब्जी बाजार

नौकरी छोड़ सतीश बने किसान:वर्मी कम्पोस्ट यूनिट के बाद लगाया दो एकड़ पॉलीहाउस

www.merikheti.com Krishan@merikheti.com +91 766 8256 275

सभी किसान भाइयों को नमस्कार,

हमारे कई किसान भाई हमें मेरीखेती की मासिक पत्रिका निकालने के लिए बोलते थे. जिसको हमारे सलाहकार मंडल के सदस्यों द्वारा स्वीकार किया तथा मेरीखेती मासिक पत्रिका का पहला संस्करण निकाला. इस संस्करण को लाने में हमारे सलाहकार मंडल के सदस्य डॉ.ओमवीर सिंह निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त) उत्तर प्रदेश, डॉ.उदय भान सिंह डीन कृषि महाविद्यालय कुम्हेर भरतपुर राजस्थान,श्री दिलीप यादव जी, श्री तेजपाल प्रधान जी, श्री राकेश शर्मा जी, लेख संकलन. स्नेहा बिष्ट, डिजाइनर संजय सिंह आदि का सराहनीय सहयोग रहा. आप सभी किसान भाइयों से विनम्र आग्रह है की हमें अपने सुझाव देते रहें जिससे की हम इस पत्रिका को किसानो के लिए और उपयोगी बना सकें.

धन्यवाद,

टीम मेरीखेती

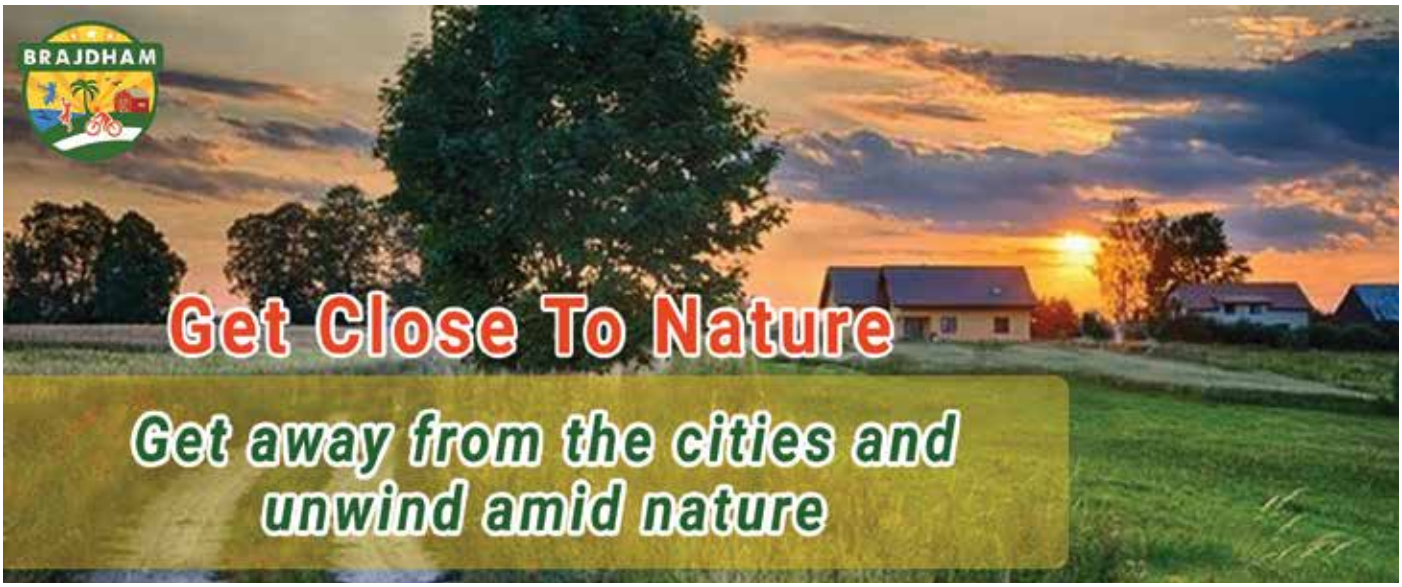

कैसे दोगुनी हो किसानों की आय

जिस देश की 80 फीसद आबादी परोक्ष या अपरोक्ष रूप से खेती किसानी से जुड़ी है उस देश में वर्ष 2013 से कृषि आय का वास्तविक मूल्यांकन नहीं किया गया। यह कथन हमारा नहीं भारत सरकार का है । वित्तीय वर्ष 2016 कृ 17 के केन्द्रीय बजट में जब सरकार ने साल 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य निर्धारित किया उस समय यह जानकारी भी साझा की।

खेती भारत की जीवन रेखा है। कोरोना जैसे काल में भी खेती ने जीडीपी में महत्वपूर्ण योगदान दिया यह बात अलग है कि किसानों को मंडियों तक अपने उत्पाद पहुंचाने और बेचने में आई पुलिस प्रशासन की अड़चनों के चलते कई इलाकों में अपनी खड़ी फसलें जोतनी पड़ीं। विकट परिस्थतियों के बाद भी देश को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने का काम किसान ने किया है। यानी खेती में पीढ़ियां खपाने वाले किसान की आय दोगुनी करने का संकल्प सरकार ने लिया तो बहुत अच्छी बात है। बेहद कम समय में वैज्ञानिक, नीति नियंताओं के लिए इसे कर पाना भले ही दुश्कर हो लेकिन यदि इस दिशा में ठोस पहल बगैर सोचे समझे होना संभव नहीं। विचार के अनुरूप नीतियां बनेंगीं। कुछ प्रयोग सफल होंगे कुछ असफल भी होंगे। सफलताकृअसफलता के मंथन से ही नई राहें निकलेंगी। यह लक्ष्य भले ही 2022 तक पूरा न हो लेकिन खेती को संबल देने की दिशा में कार्यरत लोगों के जेहन में लक्ष्य को पाने की टंकार गूंजती रहेगी। सरकार ने वैज्ञानिक ही नहीं इस दिशा में किसानों द्वारा किए जा रहे प्रयोगों को भी अपनाने की दिशा में काम तेज किया है। जिन किसानों ने किसान से उद्यमी बनने और बनाने का काम किया है उनके उत्साह वर्धन के लिए पद्मश्री जैसे पुरस्कारों की श्रेणी में पहली बार किसानों को लिया है। इतना ही नहीं खेती को संबल प्रदान करने का सरकारी उपक्रम भी कमजोर नहीं दिखता। उत्पादन में इजाफे के अलावा बेहतर बाजार प्रदान करने के लिए बेहतर मंडी सिस्टम, कृषि इनपुट खादकृबीज के संकट से मुक्ति जैसे कई प्रयास सफल हुए हैं। उर्वरकों की किल्लत के समाचार अब नहीं दिखते जबकि लागातार खपत बढ़ रही है। इसे यूरिया को नीम लेपित करके किया या अन्य तरीकों से लेकिन किसानों को उर्वरक संकट से मुक्ति मिली है। इस सचाई को कोई नहीं झुटला सकता। हर किसान के खेत तक पानी पहुंचाने को प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, प्रसंस्करण उद्योग को बढ़ाने के लिए विशेष सहूलियतें प्रदान की गई । आर्थिक सुरक्षा के लिए फसल बीमा योजना में ब्यापक सुधार किया गया। लागत घटाने के लिए मिट्टी की सेहत सुधारने के लिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड स्कीम बनाई। जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए परंपरागत कृषि विकास योजना में विशेष सहूलियतें प्रदान की गई। सिंचाई जल हर किसान तक पहुंचाने को नदियों को जोड़ने के अलावा टपक सिंचाई एवं फव्वारा सिंचाई योजनाओं पर विशेष अनुदान से अनेक किसान लाभान्वित हो रहे हैं। इज्राइली तकनीक ग्रीन हाउस, पॉलीहाउस आदि में गैर मौसमी सब्जियों के उत्पादन से युवा किसानों की सफलता की कहानियां हर राज्य में आम हो गई हैं।

— दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

क्वालिटी एवं हेल्थ कांसिस रखने वाले उपभोक्ताओं ने इन किसानों के उत्पादों को हाथों हाथ लेकर उनके प्रयोगों को संबल प्रदान किया। कृषि विविधता वाले देश में कपास, दहलन, मसाले, कच्ची सब्जियां आदि के लिए अलग अलग योजनाएं बनाना और काम करना आसान नहीं है। बागवानी मिशन के तहत विभिन्न तरह के फलों के बाग लगाने की तरफ किसानों को आकर्षित करने के लिए अनुदान योजनाएं संचालित करना सरकार की प्राथमिकता में शामिल है।

उन्नत बीज, बेहतर कीट प्रबंधन, पोषक तत्व प्रबंधन, पशु पालन, मौन पालन, मछली पालन, सरल ऋण सुविधा, बाजार व्यवस्था का सरलीकरण जैसे अनेक प्रयोग कर सरकार किसानों की आजीविका में सुधार लाना चाहती है। संपूर्ण एवं समग्र कृषि के लिए खेती, पौधे और पशु तीनों के बेहतर सामन्जस्य के लिए नीतियां हैं।

कृषि यंत्रीकरण को बढ़ावा देने के अलावा पराली जलाने की समस्या से मुक्ति को फॉर्म मशीनीकरण जैसी परियोजनाओं के माध्यम से किसानों को आधुनिक मशीनें विशेष छूट पर मुहैया कराना एक बड़ी पहल है। तीन नए कृषि कानूनों को लाने की सरकार की सोच का मोट तौर पर में भी पूरी तरह समर्थक नहीं लेकिन नीतिगत सुधारों के लिए कुछ ठोस कदम आवश्यक हैं। यह अलग मुद्दा है कानून बनते बिगड़ते रहे हैं। उनमें संसोधन की प्रकिया लागू होने के बाद भी जारी रहती है। किसान सरकार की कानूनों को जीरो आवर्स में बगैर किसी चर्चा के लाने से लेकर कई बिंदुओं को लेकर लामबंद हैं लेकिन खेती किसानी को नई ऊर्जा की जरूरत है। किसान अपने बेटे को किसान नहीं बनाना चाहते। एक अदद सरकारी नौकरी का लक्ष्य निर्धारित करने वाले युवा यदि इस तरह खेती से बिमुख होते रहे तो इतनी बड़ी आबादी को भुखमरी के कगार पर पहुंचने से कोई नहीं बचा सकता। देश को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने के लिए युवाओं को इस दिशा में सतत सक्रिय बनाए रखने के लिए खेती किसानी के तरीके और नीतियों में ब्यापक बदलाव की आवश्यकता है। इसके लिए हम सभी को सजग और तैयार रहना चाहिए।

धान की खेती की रोपाई के बाद करें देखभाल, हो जाएंगे मालामाल

धान की खेती की रोपाई का आखिरी सीजन चल रहा है। जो किसान भाई अपने खेतों में धान के पौधों की रोपाई कर चुके हो वह यह न मान कर चलें कि खेती का काम समाप्त हो गया है। खेती के बारे में कहा जाता है कि खेती का काम कभी समाप्त ही नहीं होता है। एक फसल कटने के बाद दूसरे फसल की तैयारी शुरू हो जाती है। जो किसान भाई धान की फसल से अच्छी पैदावार चाहते हैं। यदि समय पर धान के पौधों की रोपाई कर ली हो तो उसके बाद की देखभाल करनी चाहिये। फसल की जितनी अधिक देखभाल करेंगे। समय पर खाद, पानी और निराई गुड़ाई करायेंगे, उतनी ही अच्छी पैदावार पायेंगे। ऐसे किसानों की धान की खेती से अन्य किसानों की अपेक्षा अधिक आमदनी हो सकती है। आइये हम जानते हैं कि रोपाई के बाद धान के खेत में किन-किन खास बातों का ख्याल रखना पड़ता है।

रोपाई के बाद रखें खरपतवार का ख्याल

कृषि विशेषज्ञों का कहना है कि सबसे पहले तो जुलाई के माह में हर हाल में धान की रोपाई हो जानी चाहिये। जिन किसान भाइयों नेधान के पौधे की रोपाई कर ली हो तो उनहें रोपाई के दो-तीन दिनों के भीतर खरपतवार को नियंत्रित करने वाली दवा डालनी चाहिये ताकि धान की फसल में अनचाही घास अपनी पकड़ न बना सके। इसके दो सप्ताह के बाद फिर खेत का अच्छी तरह से मुआयना करना चाहिये। उस समय भी खरपतवार को देखना होगा। यदि खरपतवार बढ़ रही हो तो उसका उपाय करना चाहिये। इसके अलावा खेत में यह भी देखना चाहिये कि जहां पर पौधे न उगे हों जगह खाली बच गयी हो अथवा पौधे खराब हो गये हों। उनकी जगह नये पौधे लगाने चाहिये। इस गैप को भरने से फसल भी बराबर हो जायेगी और पैदावार भी अच्छी होगी।

पानी के प्रबंधन पर दें ध्यान

वर्षाकाल में धान की पौध को रोपने के बाद वर्षा का इंतजार करें और यदि वर्षा न हो तो सिंचाई का प्रबंधन करें। किसान भाइयों को रोपाई के बाद इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि एक सप्ताह तक खेत में दो इंच पानी भरा रहना चाहिय् इसके अलावा प्रत्येक सप्ताह खेत की निगरानी करते रहना चाहिये। खेत सूखता दिखे तो सिंचाई करना चाहिये। धान में फूल आते समय तथा दाने में दूध पड़ने के समय खेत में पर्याप्त नमी रखने का प्रबंध करना चाहिये। ऐसा न करने से पौधे सूख सकते हैं और उत्पादन प्रभावित हो सकती है। लेकिन कटाई से 15 दिन पहले से सिंचाई बंद करना चाहिये।

उर्वरकों का प्रबंधन भी जरूरी

धान की खेती में अच्छी पैदावार के लिए समय पर सिंचाई के बाद उचित समय पर खाद एवं उर्वरक का भी प्रबंधन किया जाना जरूरी होता है। धान की बुआई के समय गोबर की खाद के अलावा नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश का इस्तेमाल करना चाहिये। लेकिन नाइट्रोजन का इस्तेमाल धान की रोपाई के बाद कई बार दिया जाता है। अलग-अलग किस्मों के लिए अलग-अलग तरह से उर्वरकों का इस्तेमाल किया जाता है।

1-जल्दी पकने वाली किस्मों में बुआई से पहले प्रति एकड़ 24 किलो नाइट्रोजन, 24 किलो फास्फोरसऔर 24 किलो पोटाश को डालना चाहिये। रोपाई के बाद जब कल्ले निकलते दिखें उस समय किसान भाइयों को 24 किलो नाइट्रोजन को डालना चाहिये। इससे अच्छी पैदावार हो सकती है।

2- देर से पकने वाली फसलों के लिए प्रति एकड़ 30 किलोग्राम नाइट्रोजन, 25 किलो फास्फोरस और 25 किलो पोटाश बुआई के समय दिया जाना चाहिये तथा रोपाई करने के बाद जब कल्ले निकलते नजर आयें तो 30 किलो नाइट्रोजन का छिड़काव खेतों में करना चाहिये। इससे दाने अच्छे बनते हैं। पैदावार भी अच्छी होती है।

3- सुगंधित चावल के धान की फसल देर से पकती है। इस तरह की फसल के लिए प्रति एकड़ 50 किलो नाइट्रोजन, 25 किलो फास्फोरस और 25 किलो पोटाश तो बुआई

बुआई के समय डाली जानी चाहिये। इसके बाद जब कल्ले और बालियां निकलने वाले हों तो उस समय 50 किलो नाइट्रोजन, 12 किलो फास्फोरस और 12 किलो पोटाश डालनी चाहिये। इससे उत्तम क्वालिटी का धान पैदा होता है। साथ ही पैदावार बढ़ जाती है।

4- सीधी बुवाई वाली फसल में 50 किलो नाइट्रोजन, 20 किलो फास्फोरस, 20 किलो पोटाश प्रति एकड़ के हिसाब से बुआई के समय डाला जाना चाहिये। इसके अलावा 50 किलो नाइट्रोजन खरीद लें तो जिसके चार हिस्से कर लेना चाहिये। एक हिस्सा तो रोपाई के समय डालना चाहिये। इसका दो गुना हिस्सा कल्ले निकलते समय डालना चाहिये। इसके बाद बचा हुआ एक हिस्सा बालियां निकलते समय डालना चाहिये।

कीट पर नजर रखें और उपाय करें

धान के पौधों की लगातार निगरानी करते रहना चाहिये क्योंकि कल्ले निकलने से लेकर दाने में दूध पड़ने तक अनेक तरह के कीट एवं रोगों का हमला होता है। किसान भाइयों को चाहिये कि खेतों की निगरानी करते समय जिस कीट अथवा रोग की जानकारी मिले, उसका तुरन्त इंतजाम करना चाहिये।

सैनिक कीट

रोपाई के बाद सबसे पहले सैनिक कीट की सूंडियों के हमले का डर रहता है। यह कीट पौधों को इस प्रकार खा जाती है जैसे लगता है कि पशुओं के झुंड ने खेत को चर डाला हो। जब भी इस कीट के हमले का संकेत मिले। उसी समय मिथाइल पैराथियान या फेन्थोएट का 2 प्रतिशत चूर्ण पानी में मिलाकर घोल बनाकर छिड़काव करें।

गंधीबग कीट

रोपाई के बाद खेतों में हमला करने वाले कीटों में गंधी बग कीट प्रमुख है। इस कीट के खेत में आक्रमण होते ही बहुत दुर्गन्ध आने लगती है। ये कीट पौधों में दूधिया अवस्था में लगता है। यह कीट दूध चूस कर दानों को खोखला कर देता है। इससे धान पर काले धब्बे बन जाते हैं और उसमें चावल नही बनते। इस कीट के आक्रमण का संकेत मिलने पर मैं. लाथियान धूल 5 डी 20-25किलोग्राम प्रति एकड़ छिड़काव करें।

इसके अलावा किसान भाई क्विनालफस 25 ईसी दो मिली प्रतिलीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। इसके अलावा एसीफेट 75 एस पी डेढ़ ग्राम प्रतिलीटर पानी में मिलाकर छिड़काव कर सकते हैं। कार्बारिल या मिथाइल पैराथियान धूल को 25-30 किलोग्राम से पानी में मिलाकर छिड़काव करने से लाभ मिलता है।

तनाच्छेदक कीट

रोपाई से लगभग एक माह बाद तनाच्छेदक कीट लगने की संभावना रहती है। यह कीट फूल व बालियों को नुकसान पहुंचाता है। इसका पता लगते ही ट्राइकोकार्ड (ततैया) एक से डेढ़ लाख प्रति हेक्टेयर प्रति सप्ताह की दर से 6 सप्ताह तक छोड़ें। इसके अलावा कार्बोफ्रयूरन 3 जी या कारटैप हाइड्रोक्लोराइज 4 जी या फिप्रोनिल 0.3 जी 25 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। क्विनल, क्लो. रोपायरीफास का भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

हरा फुदका

हरे फुदका भी ऐसा कीट होता है जो पौधों के तने का रस चूस कर नुकसान पहुंचाते हैं। इस कीट की खास बात यह है कि यह पत्तों में नही लगता बल्कि तने में चिपका रहता है। काले, भूरे व सफेद रंग के ये फुदके फसल के लिए काफी खतरनाक होते हैं। इस कीट को नियंत्रित करने के लिए कार्बोरिल 50 डब्ल्यूपी 2 ग्राम प्रति लीटर या बुप्रोफेजिन 25 एस एस 1 मिली प्रति लीटर का प्रति प्रयोग करना चाहिये। इससे लाभ होगा। इसके अतिरिक्त इमिडाक्लोरोप्रिड 17.8 एसएस, थायोमेथोक्जम 25 डब्ल्यूपी, बीबीएमसी 50 ईसी का भी प्रयोग किसान भाई कर सकते हैं।

यदि आपका खेत बस्ती के आसपास है तो आपको चूहों से भी सतर्क रहना होगा। चूहों के नियंत्रण के लिए आसपास के खेत वालों के साथ मिलकर उपाय करने होंगे पहले विषरहित खाद्य चूहों को देना चाहिये। एक सप्ताह बाद जिक फस्फाइड मिला खाद्यान्न देना चाहिये। इससे चूहे समाप्त हो सकते हैं।

इसक अलावा कटाई, मड़ाई समय पर करनी चाहिये। मड़ाई के बाद अच्छी तरह सुखाने आदि का प्रबंधन भी किसान भाइयों को करना चाहिये।

बुवाई के बाद बाजरा की खेती की करें ऐसे देखभाल

बुवाई के बाद बाजरा की खेती की करें ऐसे देखभाल

बाजरा की खेती की बुवाई जुलाई से अगस्त के बीच की जाती है। लेकिन किसान भाइयों को बुवाई के बाद भी फसल पर नजर रखनी होती है। यदि खेती की निगरानी अच्छी की गयी और खेती की जरूरत के हिसाब से देखभाल की गयी तो पैदावार अच्छी होती है। इससे किसान की आमदनी भी अच्छी हो जाती है।

बुवाई के बाद सबसे पहले करें ये काम

बाजरे की पैदावार अच्छी बुवाई पर निर्भर करती है। यदि बीज अधिक बोया गया है और पौधों के बीच दूरी मानक के हिसाब से नही है तो पैदावार प्रभावित हो सकती है। यदि बीज कम हो बोया गया हो तो उससे भी पैदावार प्रभावित होती है। इसलिये खेतों में बुवाई के समय ही एक क्यारी में अलग से बीज बो देने चाहिये ताकि जरूरत पड़ने पर क्यारी मे उगे पौधो की खेतों में रोपाई की जा सके। इसके लिए बुवाई के बाद जब अंकुर निकल आयें तब किसानों को खेतों का निरीक्षण करना होगा। उस समय यह देखना चाहिये कि बुवाई के समय यदि बीज अधिक पड़ गया हो तो पेड़ों की छंटाई कर लेनी चाहिये। यदि पौधे कम हों या बीज कम अंकुरित हो सके हों तो पहले से तैयार क्यारी से पौधों को रोपना चाहिये।

सिंचाई के प्रबंधन का रखें विशेष ध्यान

हालांकि बाजरा की बुवाई बरसात के मौसम होती है। बाजरा के बीजों को अंकुरित होने के लिए खेतों में नमी की आवश्यकता होती है। इसलिये किसान भाइयों को बुवाई के बाद खेतों की बराबर निगरानी करनी होगी। यदि बुवाई के बाद वर्षा नही होती है तो देखना होगा कि खेत कहीं सूख तो नहीं रहा है। आवश्यकतानुसार सिंचाई करना चाहिये। आवश्यकता पड़ने पर दो से तीन बार सिंचाई करना चाहिये। जब बाजरा में बाली या फूल आने वाला हो तब खेत की विशेष देखभाल करनी चाहिये। उस समय यदि वर्षा न हो रही हो और खेत सूख गया हो तो सिंचाई करनी चाहिये। इससे फसल काफी अच्छी हो जायेगी।

जलजमाव हो तो करें पानी के निकालने का प्रबंध

बाजरा की खेती में किसान भाइयों को वर्षा के समय खेत की निगरानी करते समय यह भी ध्यान देना होगा कि कहीं खेत मे जलजमाव तो नहीं हो गया है। यदि हो गया हो तो पानी के निष्कासन की तत्काल व्यवस्था करनी चाहिये। जलजमाव से भी फसल को नुकसान हो सकता है।

खरपतवार को समाप्त करने के लिए करें समय-समय पर निराई गुडाई

बाजरे को खरपतवार से सबसे अधिक नुकसान पहुंचता है। चूंकि इसकी खेती बरसात के मौसम में होती है तो किसान भाइयों को वर्षा के कारण खेत की देखभाल का समय नहीं मिल पाता है।

इसके बावजूद किसान भाइयों को चाहिये कि वे बाजरा की खेती की अच्छी पैदावार के लिए खरपतवार का नियंत्रण करे। बुवाई के 15 दिन बाद निराई गुड़ाई करनी चाहिये। उसके बाद एक माह बार निराई गुड़ाई करायें। फसल की बुवाई के दो माह बाद निराई गुड़ाई करायें। इसके अलावा खरपतवार होने पर एट्राजीन को पानी में घोल कर छिड़काव करायें। किसान भाई ध्यान रखें कि एट्राजीन का छिड़काव निराई गुड़ाई करने से तीन-चार दिन पूर्व करना चाहिये। इससे काफी लाभ होता है।

बुवाई के बाद उर्वरक भी समय-समय पर दें

बाजरा की अच्छी पैदावार के लिए किसान भाइयों के बाद बुवाई के बाद खेतों को समय-समय पर उर्वरकों की उचित मात्रा देनी चाहिये। एकल कटाई के लिए बुवाई के एक माह बाद 40 किलो नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर देनी चाहिये। कई बार कटाई के लिए प्रत्येक कटाई के बाद 30 किलो नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर देनी चाहिये। जस्ते की कमी वाले क्षेत्रों में 10-20 किलो जिंक सल्फेट प्रति हेक्टेयर देनी चाहिये।

कई जगहों पर नाइट्रोजन की जगह यूरिया का प्रयोग किया जाता है। जहां पर यूरिया का प्रयोग किया जाता है वहां पर बुवाई से डेढ़ महीने के बाद 20 से 25 किलो यूनिया प्रति एकड़ के हिसाब से देना चाहिये।

कीट एवं रोग प्रबंधन

बाजरे की खेती में अनेक कीट एवं रोग लगते हैं। किसान भाइयों को चाहिये कि खेतों में खड़ी फसल को कीटों एवं रोगों से बचाने के उपाय करने चाहिये। इसके लिए खेतों में खड़ी फसल की निरंतर निगरानी करते रहना चाहिये।

जब भी जैसे ही किसी कीट या रोग का पता चले उसका उपाय करना चा. हिये। आईये जानते हैं कि कौन-कौन से कीट व रोग बाजरा की खेती में लगते हैं और उन्हें कैसे रोका जा सकता है।

दीमक :

यह कीट बाजरा की खड़ी फसल को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाता है। यह कीट जड़ से लेकर पत्ते तक में लगता है। जब भी इस कीट का पता चले किसान भाइयों को तत्काल सिंचाई के पानी के साथ क्लोरपाइरीफास 20 प्रतिशत ईसी ढाई लीटर हेक्टेयर के हिसाब से इस्तेमाल करना चाहिये। इसके अलावा नीम की खली का प्रयोग करना चाहिये, इसकी गंध से दीमक भाग जाती है।

तना छेदक कीट:

यह कीट भी खड़ी फसल में लगता है। यह कीट पौधे के तने में लगता है और पूरे पौधे को चूस जाता है। इससे पौधे की बढ़वार रुक जाती है। इससे बाजरे की फसल को बहुत नुकसान पहुंचता है। इस कीट का नियंत्रण करने के लिए कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 किलो अथवा फोरेट 10 प्रतिशत सीजी को 500 से 600 लीटर पानी में घोल. कर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिये।

हरित बालियां रोग:

इस रोग के लगने के बाद बाजरा की बालियां टेढ़ी-मेढ़ी और बिखर जाती हैं। इस रोग के दिखते ही खरपतवार निकाल कर जीरम 80 प्रतिशत डब्ल्यूपी 2.0 किलो को 500-600 पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर
छिड़काव करना चाहिये।

सफेद लट:

यह लट पौधों की जड़ों को काट कर फसल को विभिन्न अवस्थाओं में नुकसान पहुचाती है।

सफेद लट के कीट प्रकाश के प्रति आकर्षित होते हैं। इसलिये प्रकाश पाश पर आकर्षित कर सभी को एकत्रित करके मिट्टी के तेल मिले पानी में डाल. कर नष्ट कर दें।

हरी बाली रोग:

यह रोग अंकुरण के समय से पौधों की बढ़वार के समय लगता है। इस रोग से पौधों की पत्तियां पीली पड़ जातीं हैं और बढ़वार रुक जाती है। ऐसे रोगी पौधों को खेत से बाहर निकाल कर नष्ट करें और कीटनाशकों का इस्तेमाल करें।

अरगट रोग:

यह रोग बाजरा में बाली के निकलने के समय लगता है। इससे फसल को काफी नुकसान होता है। इस रोग के लगने के बाद पौधां से गुलाबी रंग का चिपचिपा गाढ़ा रस निकलने लगता है। यह पदार्थ बाद में भूरे रंग का हो जाता है। यह बालियों में दानों की जगह भूरे रंग का पिंड बन जाता है। ये जहरीला भी होता है। इसकी रोकथाम के लिए सबसे पहले खरपतवार हटायें। उसके बाद 250 लीटर पानी में 0.2 प्रतिशत मैं. कोजेब मिलाकर प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें। लाभ मिलेगा।

टिड्डियों का प्रकोप:

बाजरा की खेती में पौध बड़ा होने के कारण इसमें टिड्डियों के हमले का खतरा बना रहता है। हमला करने के बाद टिड्डी दल
पौधे की सभी पत्तियों को खा जाता है और इससे पैदावार को भी नुकसान हो. ता है। जब भी टिड्डी दल का हमला हो तो किसान भाइयों को चाहिये कि इसकी रोकथाम के लिए खेत में **फॉरेट** का छि. ड़काव करें।

बाजरे की कटाई:

बाजरे की कटाई उस समय करनी चाहिये जब दाना पूरी तरह पक कर तैयार हो जाये। यह माना जाता है कि बुवाई के 80 दिन से लेकर 95 दिन के बीच दाना पूरी तरह से पक जाता है। उसके बाद बाजरा के पौधे की कटाई करनी चाहिये। उसके बाद इसके सिट्टों यानी बालियों को अलग करके उनमें से दाना निकालना चाहिये।

आधुनिक तकनीक से मिलेगी आवारा पशुओं से मुक्ति

आवारा पशुओं की समस्या देश के कई राज्यों में किसानों को अच्छा खासा नुकसान पहुंचा रही है। इस दिशा में सरकार ने नई पहल शुरू की है। इसके लिए बेसहारा पशुओं की तस्वीर ईदृपोर्टल पर अपलोड करनी पड़ेगी। इस तस्वीर को आधार बनाते हुए संबंधित लोग पशु को पकड़कर उनके लिए बनाए गए आश्रय स्थल तक ले जाएंगे। 24 घंटे रहने वाली इस सेवा के सुचारू संचालन के लिए भी सरकार ने ठोस नीति बनाई है।

आवारा पशुओं से किसानों के होने वाले नुकसान को रोकने की दिशा में पंजाब सरकार ने यह महत्वपूर्ण पहल शुरू की है। इसके तहत पशुओं को पर्याप्त सुरक्षा तक आश्रय स्थलों में रखने के लिए हर क्षेत्र में आश्रय स्थल बनाए ुजारहे हैं। किसानों के नुकसान के अलावा सार्वजनिक स्थल और सड़कों पर आवारा पशुओं के विचरण को पूरी तरह रोकने की सरकार की योजना है। बीते दिनों आवारा पशुओं के खतरे को लेकर आयोजित समीक्षा बैठक में मुख्य सचिव श्रीमती विनी महाजन की अध्यक्षता में हुई उच्च स्तरीय बैठक में इस आशय का निर्णय लिया गया। इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए प्रशासनिक सुधार विभाग ई पोर्टल तैयार करेगा जिस पर आवारा पशुओं की तस्वीर जियो टैगिंग अपलोड करने की सुविधा 24 घंटे उपलब्ध रहेगी।

आवारा पशु की तस्वीर सीधे हैडक्वार्टर पहुंचेगी। यहां से इसे राज्य के संबंधित क्षेत्र में आवारा पशु पकड़ने वाले संबंधित अधिकारियों को भेज दिया जाएगा।

अधिकारी इस काम में लगे कर्मचारियों के माध्यम से उस वस्तु को पकड़कर आश्रय स्थल तक ले जाने का काम करेंगे। पशु को आश्रय स्थल तक ले जाने से पूर्व ही उससे जुडी व्यवस्थाएं करने को आश्रय स्थल संचालकों को पूर्व सूचना दी जाएगी। इनकी देखभाल के लिए चिकित्सकों की व्यवस्था रहेगी। पशुओं के रहने और खानेदृपीने की सभी व्यवस्थाएं होने के बाद पकड़े गए पशु की संपूर्ण जानकारी मुख्यालय को प्रेषित की जाएगी।

पंजाब में हर ब्लाक स्तर पर 5 एकड़ का कैटल पाउंड बनाने के निर्देश दिए गए हैं पूर्व के 20 सरकारी कैटल पाउंड में नए सैड बनाकर पशु संक्षा बढ़ाने पर भी सरकार का जोर है।

पशुओं के सूखे चारे के रूप में इस्तेमाल की जा सकती है लेमनग्रास

किसान भाइयों लेमनग्रास वास्तव में एक चमत्कारिक पौधा है। इस सगंध पौधे की खेती इसके तेल बेचने के लिए की जाती है। ऊसर,बंजर, रेतीली जमीन में आसानी से लगने वाले लेमन ग्रास की खेती में बहुत कम लागत आती है। इसकी खेती की खास बात यह है कि एक बार इसको लगाने के बाद आप 5 से 6 साल तक प्रतिवर्ष 6 से 7 बार कटाई करके लाभ कमा सकते हैं। इस लेमनग्रास का एक चमत्कार हाल ही में खोजा गया है कि इसका तेल निकालने के बाद बची हुई पत्तियों से सूखा चारा बनाया जा सकता है, जो पशुओं के लिए फायदेमंद साबित हो रहा है।

किसान भाइयों व पशुपालकों को मिलेगा फायदा-

कुछ समय पहले छत्तीसगढ़ के धमतरी इलाके में लेमनग्रास की खेती करने वाले किसानों ने इसको पशुओं के चारे का परीक्षण किया है। इसके काफी अच्छे परिणाम मिलने से किसानों में नया उत्साह देखा गया है। इसके साथ ही यह विश्वास हो गया है कि तेल निकालने के बाद लेमन ग्रास से जिस ताह से सूखा चारा बनाया जा रहा है उससे भविष्य में पशुपालकों को काफी लाभ होगा।

पहाड़ी, पठारी क्षेत्रों के पशुपालकों के लिए साबित होगा वरदान-

लेमनग्रास का तेल निकाल. ने के बाद बची पत्तियों को सूखा चारा बनाये जाने से उन किसान भाइयों व पशुपालकों को काफी लाभ मिल सकता है जहां पर सिंचाई की कमी की वजह से चारा आदि की हमेशा कमी रहती है।

देश के पहाड़ी और पठारी क्षेत्रों में जहां पर खेती कुदरती वर्षा पर निर्भर करती है। वहां पर लेमनग्रास की खेती करके किसान पहले तो उससे तेल निकाल कर कमाई कर सकते हैं और उसके बाद बची हुई पत्तियों को सूखे चारे के रूप में इस्तेमाल करके अपने पशुओं के स्वास्थ्य की देखभ. ाल भी कर सकेंगे। इन क्षेत्रों में पशुओं के चारे का हमेशा संकट रहता है। जब इन क्षेत्रों में पानी के अभाव में खेती नहीं हो पाती है तब चारे का सवाल नहीं उठता है।

इसके अलावा दूरदराज के गांवों में पशुओं के पालकों को न तो गेहूं का भूंसा और न ही धान की पुआल ही मिल पाती है। इसके लिए खरपतवार आदि को चारे के रूप में इस्तेमाल करना पड़ता है। इन क्षेत्रों में लेमन ग्रास की पत्तियां पशुपालकों के लिए काफी मद. दगार साबित हो सकती है।

पौष्टिक आहार का एक हिस्सा है लेमनग्रास-

दूसरा यह है कि इन क्षेत्रों के आसपास के शहरी इलाकों में पशुओं के लिए जो चारा मिलता है वो काफी महंगा होता है जो किसान भाइयों की खरीदने के क्षमता के बाहर होता है। इससे किसान भाई अपने पशुओं को पौष्टिक आहार की पूरी खूराक नहीं दे पाते हैं। इससे पशु कमजोर होते हैं, जिनकी दूध देने की क्षमता तो घटती ही है साथ ही उनके प्रजनन की क्षमता व आयु भी घटती है। ऐसी स्थिति में लेमन ग्रास किसानों को बहुत सहायक साबित होगा।

पशुओं के लिए लाभप्रद है लेमन ग्रास की पत्तियां-

लेमनग्रास के बारे में कहा जाता है कि हरी पत्तियों बहुत कड़वी और खट्टी होती हैं तथा इनसे निकलने वाले सुगन्ध भी पशुओं को नही भाती है। इसलिये पशु लेमन ग्रास की हरी पत्तियों को नहीं खाते हैं। लेकिन जब इनका तेल निकाल लिया जाता है। तब बची हुई पत्तियों में न तो कड़वा स्वाद ही रहता है और न ही उसमें उस तरह की सुगंध ही रहती है, जिससे पशु परहेज करते हैं। इसलिये इसको सूखे चारे के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

कौन-कौन से गुण होते हैं लेमन ग्रास में-

लेमन ग्रास के गुणो के बारे में कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि नींबू की सुगंध वाली यह घास एंटीऑक्सीडेंट, एंटी-सेप्टिक, एंटी एंफ्लेमेंटरी और विटामिन सी से भरपूर है। इसके अलावा इसें कैल्शियम, मैग्नीशियम, आयरन, फास्फोरस, प्रोटीन, फैट, कार्बोहाइ. ड्रेट, मिनरल, पोटेशियम, सोडियम, जिंक, कॉपर, विटामिन बी-6, विटा. मिन-ए आदि पाये जाते हैं।

औषधि के रूप में प्रयोग होने वाला पौधा है लेमन ग्रास-

इन गुणों के आधार पर लेमन ग्रास को लोग औषधीय पौधा मानते हैं। इसका इस्तेमाल चाय बनाने में मुख्य तौर पर किया जाता है। इसके प्रयोग से कोलेस्ट्रोल नियंत्रित होता है, जिससे हृदय रोग का खतरा नहीं रहता है, पाचन शक्ति बढ़ाता है, किडनी के लिए फायदेमंद है, कैंसर के लिए रामबाण मानी जाती है, वजन कम करने या चर्बी घटाने में भी फायदेमंद है, रोग प्रतिरोधक क्षमता यानी इम्युनिटी बढ़ाने में सहायक है, कोरोना काल में लोगों ने तुलसी की जगह लेमन ग्रास की चाय को अधिक प्रयोग किया। इससे उन्हें काफी लाभ भी मिला है। अनिद्रा की बीमारी में भी लेमन ग्रास फायदेमंद है। गठिया की बीमारी में भी इससे फायदा मिलता है। अस्थमा के लिए भी यह काफी लाभप्रद है। स्ट्रेस यानी तनाव के क्षणों में यह पौधा काफी लाभ पहुंचाता है। मधुमेह यानी डायबिटीज और मुंहासों यानी पिंपल की बीमारी में भी लेमन ग्रास काफी लाभ पहुंचाता है। इसी लिये लेमन ग्रास से निकले तेल की कास्मेटिक इंडस्ट्री, मेडिकल इंडस्ट्री, सोप इंडस्ट्री आदि में बहुत अधिक डिमांड है। इसलिये इसके तेल के दाम काफी अधिक रहते हैं।

किसानों को खुश करने वाली है ये खबर- इतनी खूबियों वाले लेमन ग्रास को जब पशुओं के सूखे चारे के प्रयोग किये जाने की खबर किसान भाइयों को खुश करने वाली खबर है। इससे किसान भाई लेमन ग्रास की खेती के बारे में रुचि ले सकते हैं। इससे किसानों को अनेक तरह के फायदे होते हैं।

किसान भाइयों को कौन-कौन से फायदे हो सकते हैं:-

1- जिन किसान भाइयों के पास ऊसर, बंजर और पठारीय क्षेत्रों में भूमि है, वे इसका सही इस्तेमाल लेमन ग्रास की खेती करके अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

2- लेमन ग्रास की खेती में कोई अधिक लागत नहीं लगती है। कम लागत में तैयार होने वाली इसकी खेती एक बार बोने के बाद 5 से 6 साल तक इसकी कटाई की जा सकती है। इसकी साल में 6 या 7 बार कटाई किये जाने से किसान भाइयों को अच्छा खासा मुनाफा मिल सकता है।

3- इसकी खेती में साल में बहुत कम सिंचाई की आवश्यकता होती है और निराई गुड़ाई भी बहुत कम करनी होती है। इसमें कोई कीट न लगने से किसान भाइयों को कीटनाशकों पर खर्च नहीं करना पड़ता है।

4- उर्वरक और खाद भी बहुत कम दी जाती है। इससे खेती की लागत बहुत कम आती है।

5- किसान भाइयों को खेती के साथ ही रोजगार मिल सकता है, जिसको वे स्वयं कर सकते हैं और कई लोगों को भी रोजगार में लगा सकते हैं।

6- सबसे बड़ी बात यह है कि जब किसान भाई इसकी पत्तियों का तेल निकाल लेंगे और उसकी बची हुई पत्तियों को पशुओं के सूखे चारे के रूप में प्रयोग करके अपने पशुओं को पौष्टिक आहार दे सकते हैं।

6- सबसे बड़ी बात यह है कि जब किसान भाई इसकी पत्तियों का तेल निकाल लेंगे और उसकी बची हुई पत्तियों को पशुओं के सूखे चारे के रूप में प्रयोग करके अपने पशुओं को पौष्टिक आहार दे सकते हैं।

7- इन सभी गुणों से भरपूर लेमन ग्रास का तेल निकालने के बाद जो पत्तियां बचतीं हैं तो उनमें भी काफी ऐसे तत्व मौजूद रह जाते हैं जो चारे के रूप में पशुओं को पोषक तत्व देंगे। इस तरह से ये सूखा चारा पशुओं के लिए लाभकारी होता है।

8- लेमन ग्रास की पत्तियों का तेल निकालने के बाद जब उनका पशु चारे के रूप में प्रयोग करें तो उसे संतुलित आहार के एक हिस्से के रूप में भी इस्तेमाल करें। इसके अलावा किसान भाई चाहें तो इस लेमन ग्रास की सूखी पत्तियों को पशुओं को खिलाने से पहले यूरिया से शोधित कर लें तो इससे और अधिक लाभ मिलेगा।

9- पशुओं को सूखे चारे के रूप में देने से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। उनके पेट में लगने वाले सारे हानिकारक बैक्टीरिया मर जायेंगे। इससे उनकी रोग. राक बढ़ेगी, पाचन शक्ति बढ़ेगी तो उनका दुग्ध उत्पादन भी बढ़ेगा तथा दूध में फैट भी बढ़ेगा।

भारत में लेमन ग्रास का उत्पादन- भारत में लेमन ग्रास के तेल का उत्पादन लगभग 1000 टन प्रतिवर्ष होता है। भारत के तेल में किट्रल की गुणवत्ता काफी अच्छी रहती है। इसलिए पूरे विश्व में भारतीय लेमन ग्रास के तेल की मांग रहती है। किसान भाइयों को तेल बेचने के लिए किसी तरह के बड़े प्रयास नहीं करने होते हैं बल्कि इंडस्ट्री वाले स्वयं इसके खरीदने की व्यवस्था करते हैं। भारत में लेमन ग्रास, कर्नाटक, तमिलनाडु,केरल, आंध्र प्रदेश के तटीस क्षेत्रों में अच्छी खासी खेती होती है। इसके अलावा इसकी खेती राजस्थान, महाराष्टक्र, उत्तर प्रदेश और बिहार में भी की जाती है। अब जब लेमन ग्रास की पत्तियों से सूखा चारा बनाया जा सकता है।

इसकी जानकारी के बाद अन्य राज्यों के किसान भाई भी अपने बाग-बगीचों व बेकार पड़ी जमीनों में लेमनग्रास की खेती करने में रुचि दिखायेंगे और उससे दोगुना लाभ उठायेंगे।

किसान भाइयों को मिलती है सब्सिडी :- राज्य सरकारों ने लेमन ग्रास की खेती करने वाले किसानों को सब्सिडी देने का फैसला किया है। जानकार लोगों का कहना है कि लगभग सभी राज्य सरकारों ने अपने-अपने हिसाब से किसानों को सब्सिडी देने का निर्णय किया है। जानकार होग बताते हैं कि राज्य सरकारों ने किसानों को लेमन ग्रास की खेती करने के लिए प्रति एकड़ दो हजार रुपये देने का निश्चय किया है। इसके अलावा सरकारी स्तर पर इसकी डिस्टलरी लगाने के लिए 50 फीसदी सब्सिडी देने का भी प्रावधान किया गया है। इसलिये किसान भाइयों को चाहिये कि इसकी खेती करके अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करना चाहिये।

जैविक खेती को मिलेगा यूपी में सरकार का साथ

जैविक खेती को मिलेगा यूपी में सरकार का साथ

उत्तर प्रदेश में सरकार जैविक खेती को मूल आधार देने की तैयारी कर चुकी है। सरकार जैविक उत्पादों की मार्केटिंग के लिए एफपीओ यानी कृषक उत्पादक संगठनों को माध्यम बनाएगी। इसके लिए ठोस कार्य्य योजना तैयार कर ली गई है। इस काम को अंजाम देने के लिए पूर्व में गठित जैविक क्लस्टरों को अनिवार्य रूप से एफपीओ में तब्दील किया जाएगा।

उत्पादों को बेहतर बनाने के लिए लोगो, पैकिंग आदि पर ध्यान देने के अलावा नगरीय क्षेत्रों में दो दिवसीय विशेष शिविर लगाने की व्यवस्था भी सरकार द्वारा की जा रही है। सरकार इस योजना को परंपरागत कृषि विकास योजना तथा नमामि गंगे योजना के अंतर्गत मूर्त रूप देगी।

यह निर्णय प्राकृतिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए 25 जून 2021 को आयोजित एक वेबीनार में आए सुझावों के बाद लिया गया। इस वेबीनार में कृषि विभाग के राज्य स्तरीय अफसरों के अलावा मंडी समिति, विभिन्न जनपदों के जिलाधिकारी एवं प्रगतिशील किसान भी सहभागी रहे।

निर्णय लिया गया कि 31 अगस्त तक प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर पूर्व में चयनित क्लस्टर में एक एसपीओ का गठन किया जाए। इसके लिए आवश्यक दिशा निर्देश अधीनस्थों को दिए हैं।

जैविक उत्पादों की मार्केटिंग में समस्या ना हो इस पक्ष को ध्यान में रखते हुए उनकी शार्टिंग, ग्रेडिंग एवं पैकेजिंग इकाई स्थापित करने पर भी आम सहमति बनी। उस कार्य के लिए धन की व्यवस्था भी सरकारी स्तर पर कर ली गई है।

एफपीओ का गठन होने के बाद प्रति किसान ₹2000 वैल्यू ऐडेड कार्यों के लिए उपलब्ध रहेगा। किसी भी पैकेजिंग में सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग नहीं किया जाएगा। इस काम को आगे बढ़ने से युवाओं को रोजगार मिलेगा। गरम उत्पादन को हेल्थ कॉन्शियस रखने वाले शहरी लोगों तक पहुंचाना आसान होगा। किसानों को जैविक उत्पादन की वाजिब कीमत मिल पाएगी। उनकी माली हालत में सुधार होने के चलते हुए उनके परिवारों का स्तर भी सुधरेगा।

लोगो से होगी गुणवत्ता की पहचान :- किसी भी जिले के जैविक उत्पाद को एक अलग पहचान प्रदान करने के लिए स्थानीय स्तर पर लोगो डिजाइन किए जाएंगे

ताकि उनका प्रचार-प्रसार सब जगह हो सके। 31 जुलाई तक पूर्ण किए जाने वाले इस कार्य की भरपूर ब्रांडिंग की जाएगी ताकि लोग स्थानीय स्तर पर उत्पादित गुणवत्ता युक्त उत्पाद की पैकिंग और लोगो को पहचान सकें।

मंडी में बनेंगे जैविक उत्पाद बिक्री केंद्र:-

जैविक उत्पादों की बिक्री और प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए लंबे समय से यह मांग प्रगतिशील किसानों द्वारा की जाती रही की प्रत्येक मंडी में जैविक उत्पादों की बिक्री के लिए भी एक आउटलेट की व्यवस्था होनी चाहिए। अब सरकार ने ठोस नीति बनाई है और आने वाले कल में इस दिशा में स्थाई काम होगा। इसके लिए सभी जिलों के जिलाधिकारियों को निर्देशित किया गया है। जैविक उत्पादों की नीलामी के लिए भी मंडी में अलग व्यवस्था की जाएगी। इसकी जिम्मेदारी यूपी डास्प के तकनीकी समन्वयक संयुक्त कृषि निदेशक को दी गई है।

किसानों की आय बढ़ाने के लिए छत्तीसगढ़ सरकार की खास योजना

किसानों की आय बढाने के लिए छत्तीसगढ सरकार की खास योजना:-

छत्तीसगढ़ सरकार ने अपने राज्य के किसानों की आय को बढ़ाने व खेती में निवेश को आकर्षित करने के लिए एक राज्य आयोग के गठन की तैयारी कर ली है। केन्द्र सरकार के कृषि लागत एवं कीमत आयोग की तर्ज पर छत्तीसगढ़ सरकार ने खेती किसानी आय आयोग बनाने का फैसला किया है। इससे खेती की वास्तविक लागत और उससे होने वाली आय का हिसाब-किताब लगाकर योजना बनायी जायेगी। इससे राज्य में किसानों को उनकी फसलों की लागत का आंकलन करने के बाद उन्हें लाभ दिलाया जा सके।

टास्क फोर्स की बैठक में नये आयोग पर हुई चर्चा:-

राज्य के खाद्य प्रसंस्करण, जल संरक्षण और कृषि के विकास के लिए गठित टास्क फोर्स की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के सलाहकार प्रदीप शर्मा ने राजधानी नवा रायपुर के योजना भवन में हुई इस बैठक की अध्यक्षता करते हुए बताया कि राज्य सरकार द्वारा गठित किये जाने वाले आयोग से किसानों को आमदनी बढ़ाने में बहुत सहायक होगा। उन्होंने बताया कि टास्क फोर्स को मिले सुझावों से जल्द ही एक प्रस्ताव भेजा जायेगा जिसके आधार पर आयोग के गठन का रास्ता साफ होगा। राज्य योजना आयोग के सदस्य डॉ.के.सुब्रह्मण्यम ने बताया कि आयोग किसानों की आय बढ़ाने के मुद्दे पर गंभीरता से काम करेगा।

सुझाव आते ही प्रक्रिया हुई शुरू:-

टास्क फोस में शामिल सेंटर फॉर इकनॉमिक स्टडीज एण्ड प्लानिंग जेएनयू दिल्ली के प्रो. हिमांशु ने सरकार को आयोग बनाने का सुझाव दिया है। राज्य सरकार ने उनके सुझाव को मानते हुए प्रक्रिया शुरू कर दी है। इस बैठक में विचार विमर्श के बीच यह बात सामने आयी है कि राज्य में बड़े पैमाने पर निजी फार्म हाउस के माध्यम से अनाज, सब्जी व फलों का उत्पादन किया जा रहा है। यह आयोग इन फार्म हाउस के साथ राज्य के सभी किसानों के की आमदनी बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सीएम के सलाहकार ने दिये सुझाव:- टास्क फोर्स की बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्रदीप शर्मा ने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के ड्रीम प्रोजेक्ट नरवा, गरुवा, घुरूवा, बाड़ी को बेहतर तरीके से लागू करने के सुझाव दिये। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने ये नारा दिया था कि छत्तीसगढ़ के चार चिन्हारी नरवा, गरूवा, घुरवा, बाडी, ऐला बचाना है संगवारी'। उनकी इस योजना की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी तारीफ कर चुके है। श्री शर्मा ने ग्रामीण विकास के लिए मत्स्य पालन को बढ़ावा देने की जरूरत बतायी है। श्री शर्मा ने मत्स्य पॉलिसी और एक्वा विलेज के विकास पर भी जोर दिया है। श्री शर्मा ने बताया कि गौठान में वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन एवं विक्रय करके अनेक महिला स्व-सहायता समूह अच्छी खासी आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। इसको बढ़ावा देने की जरूरत है ताकि उनकी आमदनी और अधिक हो सके। श्री शर्मा ने इसके लिए रूरल इंडस्ट्रियल पार्क बनाकर वहां से वर्मी कम्पोस्ट से अधिक लाभ दिलाने के सुझाव मांगे हैं।

आर्गेनिक खेती को बढावा देने का सुझाव:- आयोग के सदस्य अनूप श्रीवास्तव ने इस बैठक में आर्गेनिक व नेचुरल खेती को बढ़ावा देने के लिए ग्रीन प्रिक्योरमेंट पॉलिसी बनाने का सुझाव दिया। संचालक उद्यानिकी माथेश्वरण ने उद्यानिकी फसलों के कटाई के बाद के प्रोसेसिंग और उनकी कीमत बढ़ाने के प्रयासों की जरूरत बताया। इस बैठक में मौजूद सेंटर फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चन हैदराबाद के डॉ. जीवी रामंजनेयुलु ने राज्य में आर्गेनिक खेती को बढ़ावा दिने जाने की वकालत की और उन्होंने कहा कि राज्य में आर्गेनिक खेती की बहुत अच्छी संभावनाएं हैं।

नरुवा-गरुवा को उपयोगी बताया:- एलायंस फॉर सस्टेनेबल एण्ड होलिस्टिक एग्रीकल्चन दिल्ली की डॉ. कविता कुरुगांती ने कहा कि खेती के विस्तार को ग्रामीण स्तर पर मानव संसाधन यानी खेतिहर श्रमिकों को तैयार करने के लिए नरुवा-गरवा योजना बहुत ही उपयोगी है। आईआईएम बंगलौर के प्रो. त्रिलोचन शास्त्री ने राज्य में सहकारिता को बढ़ावा देकर कृषि उपज की बिक्री को और विकसित करके किसानों को अधिक से अधिक फसल मूल्य दिलाने का सुझाव दिया।

मत्स्य पालन पर दिया जोर:- चेन्नई के इकोसाइंस रिसर्च फाउंडेशन के पूर्व डायरेक्टर और सलाहकार डॉ. सुलतान अहमद ने मत्स्य पालन की संभा. वनाओं के बारे में सुझाव दिये। रायपुर की नमिता मिश्रा ने प्रवासी मजदूर की समस्याओं को भी योजना में शामिल करने का सुझाव दिया। इसके अलावा रिटायर्ड डीएमडी नाबार्ड प्रो. सृजित मिश्रा, इंदिरा गांधी इंस्टीटचूट मुंबई के डॉ. रविन्द्र पास्तोर ने भी अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिये।

क्या करेगा नया आयोगे:-

आयोग के गठन के बाद राज्य के किसानों द्वारा की जा रही खेती की लागत का आंकलन किया जायेगा। इसके साथ ही आयोग द्वारा किसानों को उनकी फसल के लिए अधिक से अधिक मूल्य दिलाने का काम किया जायेगा। इसके के अलावा आयोग द्वारा कृषि में अधिक से अधिक निवेश करने के भी प्रबंध किये जायेंगे। इससे राज्य के किसानों की फसल की लागत व बिक्री के बीच ऐसा संतुलन बनाया जायेगा जिससे किसानों की आय अधिक से अधिक हो सके।

सूनी सडक पर महिलाओं ने गुलजार किया सब्जी बाजार:-

छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले की महिलाओं ने छोटी सरकारी मदद से गांव के फल एवं सब्जियों को एक बाजार मुहैया करा दिया। इतना ही नहीं महिलाओं का समूह मिशाल बन गया है।धमधा के रास्ते में पड़ने वाले बसनी गांव की सड़क अब फल और सब्जी की दुकानों से गुलजार है। गांव के एक इलाके से देशी फलों का आकर्षण यहां से गुजरने वाले लोगों के आ. कर्षण का केन्द्र बना हुआ है। इस रास्ते पर कारोबार कर रही महिलाओं के लिए सफलता का रास्ता एक महिला पेमिन निषाद ने खोला है।

पेमिन ने सरकार की सक्षम योजना का लाभ उठाते हुए 50 हजार रूपए में फल-सब्जी की दुकान खोली। उनकी इस सफलता से उत्साहित होकर अन्य लोगों ने भी काम आगे बढ़ाया। अब गांव के ताले फल एवं सब्जियों को गांव के करीब ही बाजार मिल गया है। लोगों को बाजिव कीमत पर उपभोग की चीजें मिल रही हैं। पेमिन के प्रयास ने कभी सूनी रहने वाली सड़क को गुलजार कर दिया।

विधवा, परित्यक्ता एवं 45 वर्ष से अधिक की अविवाहित महिला छत्तीसगढ़ सरकार की सक्षम योजना की लाभार्थी बन सकती हैं। इस योजना के हितग्राहियों के लिए कर्जे पर तीन प्रतिशत ब्याज नियत है। इसके अलावा पांच साल में यह कर्जा चुकाना होता है। पेमिन ने गांव के संसाधनों का बखूबी उपयोग किया। उन्होंने क्षेत्र में पैदा होने वाली सब्जियों से शुरूआत करते हुए ग्राहकों की मांग पर अन्य सब्जियां व फल बाहर से मंगाने शुरू किए। 50 हजार में शुरू की गई दुकान से हर दिन 20 हजार की सेल होने लगी।

ऐसी ही चमकदार कहानी ग्राम हिर्री की श्रीमती नीरा यादव की है। पति की मृत्यु के पश्चात उन्होंने पान की दुकान चलाई। फिर आटा चक्की आरंभ की। किसी ने बताया कि सक्षम योजना के माध्यम से मिनी राइस मिल खोलने के लिए मदद मिल सकती है। निर्णय पर तुरंत कार्यान्वयन किया। अब हिर्री ही नहीं, टेमरी, बिरेझर जैसी नजदीकी बस्तियों से भी लोग उनके मिनी राइस मिल में पहुँचते हैं।

नौकरी छोड़ सतीश बने किसान:वर्मी कम्पोस्ट यूनिट के बाद लगाया दो एकड़ पॉलीहाउस

अलीगढ़ जनपद के गांव कैथवाडी निवासी किसान सतीश ने दो दशक पूर्व विज्ञान वर्ग से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद दवाओं की कंपनी में नौकरी लग गई लेकिन उनका मन नहीं लगा। 2005 में जॉब छोड़कर वह पैत्रक काम खेती करने का निश्चय कर खेत में उतर आए। उन्होंने सोचा नौकरी के बराबर 25 हजार रुपए मासिक आय यदि खेती से हो जाए तो किसी की गुलामी नहीं करनी होगी। इसके बाद उन्होंने खेती के साथ आय बढ़ाने के लिए वर्मी कम्पोस्ट बनाने का निर्णय लिया और कम लागत का टीन शैड डालकर 10 बैड से शुरूआत की। धीरे धीरे इसे 500 बैड तक पहुंचा दिया। वह बताते हैं कि वह तीन साल तक खाद बनाते रहे लेकिन सेल इतनी ज्यादा नहीं थी कि आय होती हो। खर्चे चलते रहते थे। तीन साल बाद खाद बिकना शुरू हुआ।10 बैड से शुरूआत की, बाद में पांचसौ बैग व पांचसौ टन का उत्पादन करना इतना आसान नहीं था लेकिन अनेक जटिलताओं के बाद भी काम बढ़ता गया। सतीश ने बताया कि किसान वर्मी कम्पोस्ट डालने के आदी नहीं हैं। वह अभी भी केवल डीएपीकृयूरिया डालने के ही आदी है।

उन्हें वर्मी कम्पोस्ट की ओर आकर्शित करने में कुछ सरकारी अफसरों का सहयोग मिला तब जाकर बात आगे बढ़ी। इससे उन्हें मासिक तौर पर 70 से 80 हजार की आय व आठ 10 लेबर का खर्चा निकल जाता था। कंपोस्ट काम चालू पड़ने के साथ उन्होंने सोचा किसंरक्षित खेती यानी पॉलीहाउस जैसी नई तकनीक का सहारा लेकर खेती में कुछ नया किया जाए। इसके लिए उन्होंने अपने जीवन की सारी पूंजी दांव पर लगा दी। इसके लिए पहले पॉलीहाउस संचालन की ट्रेनिंग ली और दो एकड़ का करीब 90 लाख का प्रोजेक्ट फाइनल कर दिया। इस पर 38 लाख की छूट सरकार की ओर से मिली। साथ ही 25 बीघा नींबू का बाग लगाया। पॉलीहाउस में लागत इतनी ज्यादा लग गई कि संचालन करना मुश्किल हो गया। संचालन के सारे इंतजाम हो गए लेकिन बीमारियों ने घेर लिया। अनेक प्रयासों के बाद भी रोगों से फसलों को बचाना मुश्किल हो गया। किसान सतीश कहते हैं कि पॉलीहाउस में तीन साल तक लाभ तो भूल ही जाइये। तीन साल तो सीखने में ही निकल जाता है। पॉलीहाउस में थ्रिप्स, निमोटोड, माइट, डाउनी आदि अनेक रोग लगते हैं। निमोटोड का समाधान किसी कंपनी और वैज्ञानिक के पास नहीं है। निमोटोड से पॉलीहाउस को बचाने के लिए मई जून में सोलराइजेशन करते हैं। जमीन पर प्लास्टिक सीट बिछाकर गर्मी देते हैं। इससे 50 प्रतिशत राहत ही होती है। इन महीनों में सब्जियों की कीमतें ठीक मिल जाती हैं लेकिन रोग नियंत्रण के लिए पॉलीहाउस खाली रखना पड़ता है। किसान सतीश कहते हैं कि पॉलीहाउस में तीन साल तक लाभ तो भूल ही जाइये। तीन साल तो सीखने में ही निकल जाता है।

पॉलीहाउस में थ्रिप्स, निमोटोड, माइट, डाउनी आदि अनेक रोग लगते हैं। निमोटोड का समाधान किसी कंपनी और वैज्ञानिक के पास नहीं है। निमोटोड से पॉलीहाउस को बचाने के लिए मई जून में सोलराइजेशन करते हैं। जमीन पर प्लास्टिक सीट बिछाकर गर्मी देते हैं। इससे 50 प्रतिशत राहत ही होती है। इन महीनों में सब्जियों की कीमतें ठीक मिल जाती हैं लेकिन रोग नियंत्रण के लिए पॉलीहाउस खाली रखना पड़ता है। वह बातते हैं कि कम्पटीशन बहुत हो गया है। पॉलीहाउस खूब लग रहे हैं लेकिन 80 प्रतिशत पॉलीहाउस में खीरा ही लगा हुआ है। खीरा जैसी फसलें घाटे का सौदा तो नहीं है, इस सवाल पर उन्होंने कहा कि फूलों की खेती से भी अनेक लोगों का मुनाफा नहीं बढ़ा। इस समय खीरा 15 रुपए प्रति किलोग्राम की दर से बिक रहा है। बाजार में 50 रुपए प्रति किलोग्राम बिक रहा है। दिल्ली, आगरा, अलीगढ़ आदि की सभी मंडियों में दो से तीन रुपए का ही अंतर नजर आता है। वह कहते हैं कि उनके खेती को लेकर खट्टे अनुभव ज्यादा रहे हैं। मीठे कम रहे हैं। अलीगढ़ में एक दर्जन पॉलीहाउस लगे हैं लेकिन एक भी सफल नहीं है। छोटे किसान को इस दिशा में कदम नहीं रखना चाहिए। वह यदि इस क्षेत्र में आना चाहता है तो लो टनल पॉलीहाउस जैसी तकनीक पर काम करके आगे बढ़ना चाहिए।

कृषि पत्रकार बनें

मेरी खेती डॉट कॉम बेवासइट एवं यूटयूब चैनल के लिए आप अपने क्षेत्र के सफल किसान की कहानी या वीडिया हमें भेज सकते हैं। हम उन्हें अन्य किसानों को प्रेरित करने के लिए अपने कार्यक्रम में शामिल करेंगे। किसान आपस में ज्ञान को बहुत तेजी से सीखते समझते हैं। आप यदि युवा हैं और खेती में कुछ करना या आगे बढ़ना चाहत हैं तो इस दिशा में विचार कर सकते हैं। हम आपके विचार को परवान चढ़ाने के लिए सदैव उत्साहित रहेंगे।

किसानों के लिए बहुत किफायती हैं न्यू हॉलैंड के ये ट्रैक्टर